थनैला रोग, केन्द्रीय प्रयोगशाला, पशु चिकित्सा महाविद्यालय
लाला लाजपत राय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार

थनैला रोग

थनैला रोग से बचने के लिये संदेह की स्थिति में दूध की कल्चर एवं सेन्सीटिविटी जाँच समय पर करवा कर जीवाणुनाशक औषधियों द्वारा उपचार पशु चिकित्सक द्वारा करवाना चाहिए।

दूध के नमूने 2 या 5 मिली की नई सिरिंज में पीछे से प्लेंजर निकालकर अलग अलग सिरिंज में ले और उस पर हर थन की पहचान लिखें। यह नमूना जल्दी से जल्दी जाँच के लिए केन्द्रीय प्रयोगशाला, पशु चिकित्सा महाविद्यालय, लाला लाजपत राय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार में पहुंचाए।

रोकथाम और नियंत्रण

दूध दुहने से पहले पशु के शरीर की अच्छी तरह सफाई कर लेना चाहिए। दूध दूहने से पहले और बाद में थनों को पोटेशियम परमैगनेट अथवा लाल दवा मिश्रित पानी के घोल से धोना चाहिए। दूध दुहने की तकनीक सही होनी चाहिए जिससे थन को किसी प्रकार की चोट न पहुंचे। दूध दुहने में पूर्ण हस्त दुहन विधि को प्रयोग में लायें।